Original Research Paper | Arts | Volume : 6 ¦ Issue : 9 ¦ Sep 2021 ¦ e-ISSN : 2456-5040

भारतीय संगीत के अंतर्गत मनोविज्ञान की अवधारणा

डॉ. महेश चंद्र पाण्डे

एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग, एम.बी.राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्द्वानी (नैनीताल)

ABSTRACT

आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान का अत्यन्त महत्व है और इससे शिक्षा मनोविज्ञान की उपयोगिता भी सिद्ध होती है। आज शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन के फलस्वरूप समस्त शैक्षणिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन होने लगा है। शिक्षा में मनोविज्ञान का आधार आ जाने के कारण शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण ही बदल गया है। शिक्षा उपकरणों के अन्तर्गत विभिन्न यंत्र चित्र, रेडियो, सिनेमा, टेलीविजन सभी उपयोगी सिद्ध होने लगे है। आधुनिक शिक्षा में मनोविज्ञान, एक अहम भूमिका अदा कर रहा है। मनोवैज्ञानिक ढंग से सोचने–समझने और तदनुसार क्रियान्वयन से शिक्षण की दृष्टि में काफी बदलाव आ गया है। संगीत अपने आप में सृजन प्रक्रिया का द्योतक है। संगीत में प्रदर्शन हो या शिक्षण, सृजनशीलता हमेशा विद्यमान रहती है। मनुष्य जबसे ही संगीत के संपर्क में आता है और शिक्षा–दीक्षा प्रारंभ करता है, सृजनात्मक प्रक्रिया आरंभ हो जाती है। शिक्षण के क्रम में चाहे शिक्षक हो या शिक्षार्थी, अथवा प्रदर्शन के क्रम में चाहे कलाकार हो या श्रोता, दोनों के लिये ही यह सृजनशील है। इस संपूर्ण प्रक्रिया में दोनों ही आनन्दाविभोर होते हैं और आनन्द का सृजन होता है। कलाकार और श्रोता तथा शिक्षक और विद्यार्थी दोनों ही इस सृजन की प्रक्रिया में बराबर के भागीदार होते हैं और आपस में सामंजस्य स्थापित करते है।

प्रस्तावना

किसी राष्ट्र अथवा समाज के निर्माण के लिये मनुष्य सबसे महत्वपूर्ण घटक है। मानव ही वह इकाई है, जिसके संगठित होने पर क्रमानुसार परिवार, समाज, शहर, राज्य और देश का निर्माण होता है। कोई भी राष्ट्र,समाज, संस्कृति या सभ्यता उस समय तक उन्नति के पथ पर अग्रसर होता नहीं माना जा सकता, जब तक कि उसमें निहित प्रत्येक मानव को यह सुविधा न प्राप्त हो कि अपनी क्षमतानुसार स्वतन्त्रतापूर्वक वह अपना मानसिक विकास कर सके। अपने मानसिक विकास के क्रम में प्राचीनकाल से ही मनुष्य ज्ञानार्जन की ओर उन्मुख हुआ है। क्योंकि वास्तव में मानव के विकास के इतिहास में शिक्षण एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अन्य प्राणियों का सीखना स्वतः चलता रहता है, जबकि मानव को सीखने के लिये शिक्षण की आवश्यकता होती है। मनोवैज्ञानिक मेसलो के अनुसार "कला का सृजन मनुष्य, उच्च आवश्यकताओं यथा सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की प्राप्ति हेतु करता है।" ललित कला के प्रमुख तत्वों में रचना की दृष्टि से कल्पना का सर्वोपरि स्थान है। कल्पना का सीधा संबंध मानव के मन–मस्तिष्क से है, अतएव मनोविज्ञान और कला का भी अत्यन्त निकट का संबंध स्थापित जान पड़ता है। क्योंकि कल्पना ही वह तत्व है जिससे कलाकार को नई रचना और अभिनव रूप–व्यापार–विधान की शक्ति प्राप्त होती है। वस्तुतः कल्पना कलाकार की सृजनशक्ति है, जिसे अंग्रेजी में इमैजिनेशन कहते हैं। जिसका शाब्दिक अर्थ होता है सृष्टि करना, प्रतिविम्बित करना।

मनोविज्ञानः विषय एवं अर्थ

प्राचीन काल से ही प्रथमतः मां से ही जीवन की प्रारम्भिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शिक्षण लेता रहा है। फिर इसमें पिता भी अपना योगदान देने लगा और परिवार की रूपरेखा बनने पर परिवार के अन्य सदस्यों ने भी इस दिशा में सहयोग किया। जब समाज के ढाँचे का निर्माण हुआ तो शिक्षण, समाज का एक महत्वपूर्ण कार्य हो गया और शिक्षण के लिये विशिष्ट व्यक्तियों को उत्तरदायित्व दिया जाने लगा।

मानव ने इस ओर भी खोज की कि उसमें क्या विचित्रता है। यह भी पाया गया है कि मानव के मस्तिष्क का विकास दूसरे प्राणियों से कहीं अधिक है। दूसरे प्राणी सीखने की क्षमता तो रखते हैं, किन्तु यह मानव से बहुत कम है।

चूंकि व्यवहारगत–शिक्षण मानव के साथ प्रारम्भ से जुड़ा है, अतएव इन्हीं सब बातों से संबंधित प्रश्नों के उत्तर हेतु मनोविज्ञान जैसे विषय की सहायता में जाना पड़ता है, जो मानव–व्यवहार के ज्ञान से संबंधित है।

वस्तुतः मनोविज्ञान अभी कुछ वर्षों से ही स्वतंत्र विषय के रूप में सामने उभर कर आया है। "मनोविज्ञान दर्शन–शास्त्र की वह शाखा है, जिसमें मन और मानसिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।" कालान्तर में विद्वानों में व्याप्त इस भ्रम का निवारण हुआ और आज मनोविज्ञान स्वतंत्र विषय के रूप में शुद्ध विज्ञान माना जाता है।

16वीं शताब्दी तक 'मनोविज्ञान' आत्मा का विज्ञान माना जाता था और आत्मा की खोज और उसके बारे में विचार करना ही इसका मुख्य उद्देश्य था। बाद में मानसिक शक्तियों, मस्तिष्क के स्वरूप और उसकी प्रकृति के सही निर्धारण के अभाव में इस धारणा को भी छोड़ना पड़ा और इसे चेतना का विज्ञान कहा जाने लगा, क्योंकि मस्तिष्क का सम्बन्ध व्यक्तित्व, विवेक और विचारणा–शक्ति से है। चेतना भी तीन भागों में विभक्त है– चेतना, अर्द्धचेतना और अचेतन। कालान्तर में मनोविज्ञान विषय का जिस ढंग से विकास हुआ है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, विशेषकर शिक्षा–दीक्षा के क्षेत्र में जिस प्रकार से इसकी महत्ता बढ़ी है, उससे इस विषय की मूलभूत आवश्यकता ही दृष्टिगोचर होती है।

मनोविज्ञान की परिभाषाएं

विभिन्न विद्वानों ने जो इसकी परिभाषा दी है उनमें कुछ प्रमुख इस प्रकार है–

जी. वुडवर्थ : मनोविज्ञान, वातावरण के अनुसार व्यक्ति के कार्यों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।

ई. वाटसन : मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध विज्ञान है।

चार्ल्स ई. स्किनरः "मनोविज्ञान जीवन की विविध परिस्थितियों के प्रति प्राणी की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है। प्रतिक्रियाओं या व्यवहार से तात्पर्य प्राणी की सभी प्रकार की प्रतिक्रियाओं, समायोजन, कार्यों तथा अनुभवों से हैं।

जेम्स ड्रेवर : मनोविज्ञान वह शुद्ध विज्ञान है, जो मानव तथा पशु के उस व्यवहार का अध्ययन करता है, जो व्यवहार उस अन्तर्जगत के मनोभावों और विचारों को अभिव्यक्त करता है, जिसे हम मानसिक जगत कहते हैं।

मनोविज्ञान मानव के व्यवहार का निरीक्षण करता है। मानव का व्यवहार उसके मानसिक जीवन पर निर्भर करता है। मनोविज्ञान को जब हम "व्यवहार का विज्ञान" कहते हैं तो इससे तात्पर्य यह है कि,मनोविज्ञान व्यवहार का अध्ययन करता है, अतएव यह शुद्ध विज्ञान तभी माना जा सकता है जब व्यवहार का अर्थ स्पष्ट हो।

मनोविज्ञान मानव के व्यवहार का निरीक्षण करता है, और यह व्यवहार उसके मानसिक जगत पर निर्भर करता है। इस प्रकार मनोविज्ञान एक शुद्ध विज्ञान के रूप में मस्तिष्क का अध्ययन करता है।

Copyright© 2021, IEASRJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

विद्वानों के अनुसार मनोविज्ञान का विकास–

मानव–मस्तिष्क से सीधे सम्बंधित एवं व्यवहार पर पूर्णतः आधारित विषय होने के कारण मनोविज्ञान का इतिहास अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मनोविज्ञान विषय के इतिहास के अध्ययन के क्रम में सर्वप्रथम इसाकोन एवं मैक्स हट द्वारा प्रतिपादित ऐतिहासिक दृष्टिकोण का आधार मिलता है, जिसके अनुसार मनोविज्ञान की क्रियाएं चार विभिन्न प्रकार की धाराओं से विकसित हुई हैं। जो इस प्रकार हैं–

1. दर्शन शास्त्र
2. दैहिकी
3. शयनिक अध्ययन, तथा
4. मानसिक परीक्षण

इन चारों धाराओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है –

1. दर्शन–शास्त्रः मनोविज्ञान के बारे में सबसे पहले विश्व के दार्शनिकों ने ही अपने विचार दुनिया के सामने प्रस्तुत किये, जिनमें प्लेटो, अरस्तु तथा अन्य यूनानी दार्शनिक पश्चिम में तथा हिन्दू, बौद्ध और कनफ्युसियस सम्प्रदाय के चीनियों ने मनोविज्ञान संबंधी विचारधारायें प्रचलित की। किन्तु आज के परिवेश में इन दार्शनिकों के विचार मनोविज्ञान के लिये बहुत कम महत्व के रह गये हैं।

मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र के शिकंजे से निकाल कर एक अलग विषय बनाने का श्रेय अमेरिका के विलियम जेम्स (1842–1910) को जाता है, जिन्होंने 1890 ई. में 'मनोविज्ञान के सिद्धान्त' नामक एक पुस्तक विश्व को प्रदान की।

2. दैहिकीः दैहिकी के विकास का सीधे रूप से प्रभाव आधुनिक मनोविज्ञान के विकास पर पड़ा। दैहिक–विज्ञान ने मस्तिष्क, इसके संवेगात्मक संस्थान तथा व्यवहार के शरीरीय आधार पर अध्ययन किया।

हरमॉन वोन हेल्महोल्ट्ज (1821–1894) ने जो अध्ययन ऑख और कान पर तथा रंग प्रत्यक्षीकरण पर किये, उन्होंने मानव प्रत्यक्षीकरण को समझने में बहुत सहयोग दिया।

विलहेम वुन्ट (1832–1920) ने सबसे प्रथम एक मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित की तथा प्रायोगिक मनोविज्ञान की शाखा को जन्म दिया।

3. शयनिक अध्ययनः मानसिक रोगियों के उपचार की विधियों को खोज करने के सिलसिले में भी आधुनिक मनोविज्ञान का विकास एक स्वतंत्र विषय के रूप में हुआ। फ्रायड (Freud) महोदय ने मानसिक रोगियों के उपचार की एक नई विधि निकाली, उनके उपचार की विधि तथा व्यक्तित्व के सिद्धांत को मनो–विश्लेषण कहा गया है। इस सिद्धांत ने मनोविज्ञान व्यवहार के विज्ञान को नई दिशा प्रदान की।

4. मानसिक परीक्षणः फ्रांस के विख्यात विद्वान ऐलफ्रेड बिने (1857–1911) ने एक मानकीकृत मानसिक परीक्षण विधि विकसित की। यह एक परीक्षण–आन्दोलन का आरम्भ था जो संपूर्ण संसार में फैल गया। इस आन्दोलन ने बुद्धि तथा मानसिक योग्यताओं सदृश मनोविज्ञान के प्रत्ययों के विकास में काफी सहयोग दिया।

मनोविज्ञान विषय से संदर्भित उपर्युक्त चार तत्वों का जिस ढंग से विकास हुआ,उसी का यह फल है कि मनोविज्ञान एक अलग विषय के रूप में आज स्थापित हो सका है। आज संपूर्ण विश्व में मनोविज्ञान विषय की महत्ता है और विशेषकर संगीत विषय के संदर्भ में तो इसकी उपयोगिता एवं महत्ता प्रायः हर पहलू में अक्षुण्ण है। चाहे संगीत में शिक्षण हो या अभ्यास, प्रदर्शन हो या पाठ–निर्माण, मनोविज्ञान विषय की स्थापना एवं प्रयोग से एक नई दिशा मिल रही है।

मनोविज्ञान एवं कला–

कला एवं मनोविज्ञान का सीधा सम्बंध है, क्योंकि कला का सीधा संबंध मन से है। ह्रदय ही कला का उद्गम स्थल है और मनोविज्ञान मनुष्य की अन्तर्निहित भावनाओं एवं व्यवहार के परिप्रेक्ष्य में मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करता है। कला भी मन की आन्तरिक भावनाओं का उद्गार होने के कारण मनुष्य की मनःस्थिति एवं मस्तिष्क से संबंधित है। कला के संदर्भ में मनोविज्ञान में ऐसी मान्यता है कि प्रतीक–विधान के द्वारा सृजनता का आविर्भाव होता है तथा कलाकार अपने चेतन और अचेतन मन तथा विषय प्रधान चित्त में एक सामंजस्य स्थापित करता है। यही सामंजस्य कला के रूप में मुखरित होता है और मनःस्थिति को प्रदर्शित करता है। वैसे ललित कलाओं की व्याख्या जिस प्रकार संगीत–साहित्य में हुई है, वैसी मनोविज्ञान के क्षेत्र में नहीं। मनोविज्ञान ने यद्यपि, स्वतंत्र रूप से ललित कलाओं को अध्ययन का विषय नहीं बनाया है, किन्तु मानव–व्यवहार के विश्लेषण के संबंध में कला की उत्पत्ति के मनोवैज्ञानिक कारण भी बताये गये हैं और यह निश्चित रूप से मन एवं मस्तिष्क से संबंध रखता है। मनुष्य के मन की ही यह उड़ान है, कल्पना है, जिसने कला की उत्पत्ति को सीधे प्रभावित किया है। मनोविज्ञान में निहित तथ्यों के अनुसार मन के तीन खंड हैं– चेतन मन, व्यक्तिगत अचेतन मन और सामूहिक अचेतन मन। कला की उत्पत्ति के विषय में तथ्य है कि कला जिस प्रकार मन–मस्तिष्क से संबंधित है, उसका आधार प्रतीक है

फ्रायड ने कलाकार को असामान्य व्यक्ति के समान बताया है, किन्तु कलाकार असामान्य व्यक्ति नहीं, क्योंकि कलाकार अपने कल्पना जाल से, जिसे वह स्वयं बुनता है, पुनः यथार्थ में लौट आता है।

विचारकों ने कल्पना को दो अर्थों में स्वीकार किया है एक अर्थ में कल्पना वस्तु सन्निकर्ष के सामान्य प्रभावों को सुरक्षित रखती है, और दूसरे अर्थ में कल्पना वस्तु–सन्निकर्ष के मानसिक प्रभावों से निर्मित्त बिम्बों को संगृहीत कर उन्हें सहस्रों प्रकार के संयोजन प्रदान करती है। इसी कल्पनाशक्ति के द्वारा कलाकार पहले से ज्ञात वस्तुओं अथवा पूर्वानुभूति प्रत्ययों या भाव–स्थितियों का पुनर्भावन करता है। मनोविज्ञान की कल्पना, यद्यपि कला–साहित्य की कल्पना से भिन्न होती है, तथापि इस में पात्र, स्थान और आसंग और गुण–निबन्धन का विशेष महत्व रहता है।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार कल्पना के मुख्य भेद इस प्रकार है –

1. दृष्टि कल्पना
2. ध्वनि कल्पना
3. स्पर्श कल्पना
4. घाण कल्पना
5. क्रिया कल्पना और
6. रस कल्पना।

दृष्टि–कल्पना का सबसे निकट संबंध स्मृति के साथ है। इस कल्पना में प्रत्यभिज्ञान की प्रचुर क्षमता होती है। इसी प्रकार ध्वनि–कल्पना श्रुत–स्वर लहरी के आनुपूर्वी रूप में दोहराने में समर्थ होती है। इसमें एक प्रकार की संरक्षण–शक्ति रहती है। संगीत कला में इस कल्पना से पुष्कल सहायता ली जाती है।कला और विज्ञान दोनों में बुद्धि और कल्पना की नितान्त आवश्यकता होती है। जिस तरह कल्पना का धनी किन्तु बुद्धि का दरिद्र कलाकार प्रथम पंक्ति का अधिकारी नहीं हो सकता, उसी तरह बुद्धि का समृद्ध, किन्तु कल्पना का अकिंचन वैज्ञानिक भी प्रथम कोटि में गण्य नहीं हो सकता। इसीलिए जिस युग में कल्पना और बुद्धि का समन्वय रहता है, उसी में महान कलाकार या महान वैज्ञानिक को पैदा करने की क्षमता रहती है। कल्पना में अदृश्य को दृश्य बनाने की एक अद्भुत शक्ति रहती है।

जीव वैज्ञानिकों और शरीर शास्त्रियों ने कल्पना को मस्तिष्क से ही सम्बद्ध माना है।

जॉन सी. इक्लेस के अनुसार कल्पना मानसिक अनुभूतियों की वह सर्वोपरि सतह है, जो ऐन्द्रिय अनुभूति, मानसिक बिम्ब, स्मृति और मनोविभ्रम की अनेक निम्नवर्ती सतहों पर निर्भर रहती है। अतः मस्तिष्क की क्रिया से सम्बद्ध होने के कारण कल्पना का अनिवार्य संबंध मानव मस्तिष्क से होता है, जहाँ से सारी क्रियाओं का संचालन होता है। मस्तिष्क से संबंधित एक और ऐसी महत्वपूर्ण शक्ति है, जिसके सहारे मनुष्य पूर्वानुभूत ऐन्द्रिय संवेदनों और अनुभूतियों को फिर से बुला लेता है, जिसे हम सामान्यतः स्मृति कहते हैं।

अनुभूतियों के इस पुनरावर्तन अथवा पुनराह्वान की एक जैव पद्धति होती है, जिसके सहारे हम मानसिक चित्रों को पाते हैं। प्रायोगिक परीक्षण से यह सिद्ध किया गया है कि वही इन्द्रियानुभूति स्मृति हो सकती है, जिसका मस्तिष्कीय आघात कम–से–कम बीस मिनट तक ठहरता है। वैसे भी विद्वानों ने यह निश्चित कर दिया है कि कल्पना स्मृति पर निर्भर करती है। श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना इत्यादि सभी वृत्तियों के पीछे भी यही मानसिकता द्रष्टव्य होता है। संगीत में रागों के विशेष स्वर निर्धारण, उनका समयानुकूल प्रयोग तथा विशेष उल्लेख के रूप में विधिवत् शिक्षण एवं अभ्यास

इत्यादि सभी के पीछे एक मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि का सशक्त आधार हमें प्राप्त होता है। इस सभी बातों पर यदि मनोवैज्ञानिक ढंग से विश्लेषणोपरान्त पूरी तरह उन सिद्धान्तों का परिपालन किया जाये तो निश्चित रूप से उपलब्ध आंकड़ों में काफी अन्तर परिलक्षित होगा।

इस प्रकार हम पाते हैं कि कला और मनोविज्ञान में काफी साम्य है और संगीत कला के संदर्भ में आधुनिक परिवेश में संगीत शिक्षण में, अध्ययन, अभ्यास, प्रस्तुति इत्यादि सभी में मनोविज्ञान विषय एवं उनके सिद्धान्तों के अनुपालन की नितान्त आवश्यकता है।

संगीत और मनोविज्ञान

कला की अभिव्यक्ति मानव–जीवन में सृष्टि के प्रादुर्भाव के समय से ही रही है। अपनी अन्तर्भावनाओं को व्यक्त करने के लिये मनुष्य ने विभिन्न माध्यमों का, प्रारम्भ से ही, सहारा लेना शुरू किया। अपने आस पास होने वाले सभी घटनाओं को, चाहे वह सुख प्रदत्त हो या दुःख प्रदत्त, व्यक्त करने में मानव ने प्रकृति का सशक्त सहारा भी सृष्टि के उद्‌भव काल से ही लेना प्रारम्भ किया है। यह उसकी विकसित हो रही मानसिकता ही थी, कि दुःख के समय में रोना या विषादयुक्त चिल्लाना तथा सुख की घटनाओं में विभिन्न प्रकार की हर्षयुक्त ध्वनि उत्पादित कर अपनी भावनाओं को व्यक्त करता आया है।

कालान्तर में सृष्टि के विकास के साथ–साथ संगीत का भी विकास हुआ। स्वर और लय से अभिभूत संगीत ने विश्व इतिहास के प्रत्येक काल में अपनी विशिष्टता से मानव सभ्यता एवं संस्कृति को प्रभावित किया है। जीवन के हर क्षेत्र में संगीत की महत्ता प्रारम्भ से ही मानी जाती है। चाहे हर्ष व्यक्त करना हो या विषाद, चाहे रंगमहल हो या लड़ाई का मैदान – एक विशेष प्रकार का संगीत प्रस्तुत होते ही उस भावना का आभास होने लगता है। हर उन भावनाओं को व्यक्त करने के पीछे कुछ विशिष्ट मानसिकता का आभास होता है, जिसके माध्यम से अलग–अलग प्रकार की भावनायें व्यक्त होती हैं। क्योंकि संगीत मानव जीवन के हर पहलू को प्राचीन काल से ही प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता आ रहा है। समाज के प्रत्येक कार्य में आज संगीत की महत्ता सभी को ज्ञात है। वैवाहिक कार्य हो या धार्मिक कार्य, लड़ाई का मैदान हो या शांति के लिये कार्य या फिर कोई भी संस्कार संगीत की आवश्यकता एवं महत्ता प्रत्येक स्थान पर है।

संगीत की महत्ता निम्न पाँच अंगों के अन्तर्गत विशेष रूप से उल्लेखनीय है –

1. दार्शनिक
2. मनोवैज्ञानिक
3. सामाजिक
4. शैक्षणिक
5. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध।

जीवन के दर्शन, धर्म से संगीत सीधे जुड़ा हुआ है। साकार, निर्गुण, परब्रह्म की प्राप्ति तो नाद साधना के द्वारा ही मानी गयी है और भक्तिमार्ग से ओत–प्रोत संगीत मोक्ष–प्राप्ति का सुगम साधन है, जो हमारे दर्शन की मूल धारणा है।

हमारा संगीत समाज से भी सीधे संबंधित है । मानव जीवन का प्रत्येक क्षण संगीत पर आधारित है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक संगीत के ताने–बाने में आबद्ध है। जहाँ तक मनोवैज्ञानिक महत्ता का प्रश्न है, इसका सीधा संबंध संगीत–शिक्षण से है।संगीत चूंकि एक प्रदर्शन कला है, अतः प्रदर्शन के लिये एक स्वस्थ मानसिकता एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से तैयारी भी अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षण से संबंधित होने का प्रमुख कारण यह है कि शिक्षा मनुष्य में संतुलित व्यक्तित्व के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इसमें विद्यार्थी की प्रवृत्ति, रुचि, बुद्धिमत्ता इत्यादि सभी गुणों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षण की आवश्यकता पर ध्यान दिया जाता है। इतना ही नहीं मनोवैज्ञानिक ढंग से संगीत–शिक्षण में व्यवहार की भी अहम भूमिका रहती है और यही व्यवहार संगीत के मनोविज्ञान के अन्तर्गत त्वरित प्रगति के लिये अत्यन्त आवश्यक माना जाता है। जहाँ तक अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों का प्रश्न है, संगीत स्वर–लय से ओत प्रोत होने के कारण विभिन्न देशों के मध्य सांस्कृतिक संबंधों के स्थापित करने एवं जहाँ स्थापित है उन्हें और प्रगाढ़ करने हेतु एक सशक्त सेतु का कार्य करता आ रहा है। क्योंकि स्वर–लय भाषा से परे होने के कारण प्रायः प्रत्येक मानव में हर्षातिरेक उत्पन्न करती है, चाहे वे किसी भी देश के क्यों न हों।

इस परिप्रेक्ष्य में कुछ विद्वानों के मन्तव्य द्रष्टव्य हैं– आधुनिक युग में मनोविज्ञान जीवन के हर क्षेत्र में सफलता के लिये एक अचूक माध्यम के रूप में प्रयुक्त होता जा रहा है। जीवन के सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक पहलुओं को मनोविज्ञान प्रभावित किये बिना नहीं रह पाता है। शिक्षा–दीक्षा के संबंध में भी प्राचीन काल से ही मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की प्रथा है। विद्यार्थी की विषय के प्रति अभिरुचि, उसका बौद्धिक स्तर, ग्राह्य माध्यम, परिश्रम, इत्यादि कुछ ऐसी बातें हैं, जिनका ध्यान प्रारम्भ से ही रखा जा रहा है। चाहे वह शिक्षा की प्राचीन गुरुकुल पद्धति हो या आधुनिक शैक्षणिक संस्थान। मनोविज्ञान को विषयगत मान्यता प्राप्त होने के उपरान्त विभिन्न क्षेत्रों में इसको उपयोगिता का ध्यान रखते हये इसकी कई शाखाओं का निर्माण किया गया। शिक्षा से जुडी मनोविज्ञान की बातें शिक्षा मनोविज्ञान के नाम से जानी जाती है। आदिकाल से ही शिक्षण मानव विकास के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। शिक्षा, चाहे घर के अन्दर की हो या शिक्षण संस्थान की, यदि मनोवैज्ञानिक ढंग से दी जा रही हो, तो ग्राह्यता में काफी वृद्धि आ जाती है। संगीत के परिप्रेक्ष्य में मनोविज्ञान के माध्यम से यह ज्ञात होता है कि बचपन से ही संगीत के प्रति बालक की रुचि, रुझान एवं व्यक्त करने की प्रवृत्ति कितनी है। क्योंकि संगीत के विद्वानों के अनुसार संगीत की दृष्टि में किसी भी मनुष्य में स्वर, लय, संवादित्व एवं विस्तार (Volume) के प्रति प्रारंभ से ही संवेदनशीलता विद्यमान रहती है, जो उम्र के बढ़ने के साथ–साथ बुद्धिमत्ता के आवरण में बढ़ती रहती है।

संदर्भ–सूची

1. Charles, E- Skinner Educational Psychology, p. 1.
2. रॉबर्ट एल. इसाकोन एवं मैक्स एल. हट साइकॉलॉजी, द साईंस ऑफ बिहेवियर, न्यूयार्क, हार्पर एण्ड से 1971 सेकन्ड एडिशन।
3. सी.जी. युंग कन्ट्रिब्यूशंस टु एनालिटिकल साइकालॉजी, लन्दन, 1928.
4. सात्रे, दी साइकालॉजी ऑफ इमैजिनेशन, लन्दन, पृ. 211.
5. सौन्दर्य शास्त्र के तत्व डॉ कुमार विमल राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981, पृ. 13.
6. Psychology of Music, Carl E. Seashore, McGraw-Hill Book Co. London, 1938, pp. 28-32
7. भारतीय संगीत का इतिहास डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 128.
8. ऋ.भा.भू., पृ. 49.
9. भारतीय संगीत का इतिहास डॉ. श. श्री. परांजपे चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 130.
10. ना. शि., पृ. 1–2–4.
11. कला विवेचन, डॉ. कुमार विमल, भारती भवन, पटना, पृ. 44.
12. शिक्षा मनोविज्ञान, डॉ. माथुर, आगरा, पृ. 19.
13. शिक्षा–मनोविज्ञान, डॉ. एस.एस. माथुर, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ. 45.